शिखर 2

इकाई 1: हमारा परिवार

पाठ 1. चश्मा खो गया

कविता का उद्देश्य

प्रस्तुत पाठ के माध्यम से बच्चों को बड़े-बूढ़ों का सम्मान करने और उनकी बातें मानने की शिक्षा दी गई है। बच्चों को यह समझाया गया है कि हमें अपने घर के बड़े-बूढ़ों जैसे– दादा-दादी, नाना-नानी आदि की चीज़ों का ध्यान रखना चाहिए। सबकी मदद करने की सीख और अपनेपन की भावना जाग्रत करना ही इस पाठ का मुख्य उद्देश्य है।

कविता का सारांश

रूमी की दादी सुबह से अपना चश्मा ढूँढ़ रही हैं। उनकी आँखें कमज़ोर हैं इसलिए वे बिना चश्मे के अखबार नहीं पढ़ सकती हैं। दादी ने रूमी से कहा, "बेटा मेरा चश्मा नहीं मिल रहा हैं, ज़रा ढूँढ़ दो।" रूमी उठकर चश्मा ढूँढ़ने लगी। रूमी ने बगीचे में जाकर चश्मा देखा पर चश्मा वहाँ भी नहीं था। उसके बाद रूमी ने दादी के पलंग के नीचे देखा पर चश्मा वहाँ भी नहीं था। दादी ने परेशान होकर पूछा, "मिला चश्मा?" फिर रूमी ने दादी को देखा और ज़ोर से चिल्लाई– "मिल गया, मिल गया!" रूमी ने दादी को बताया, "चश्मा तो आपने सिर पर ही लगा रखा है।" दादी ने सिर पर हाथ लगाकर देखा और वो हँस पड़ी। फिर रूमी भी दादी के साथ ज़ोर-ज़ोर से हँसने लगी। उसके बाद दादी ने चश्मा लगाया और अखबार पढ़कर रूमी को सुनाने लगीं।

अध्यापन संकेत

पाठ पढ़ाने से पूर्व **पहले पहल** में दी गई गतिविधि बच्चों से करवाएँ। पाठ की पृष्ठभूमि तैयार करते हुए बच्चों से 'दादी' से संबंधित चर्चा करें। उनसे उनकी दादी के बारे में पूछें। जैसे कि क्या आपकी दादी चश्मा पहनती हैं? क्या वे अखबार पढ़ती हैं? क्या वे आपको कहानियाँ सुनाती हैं? आदि चर्चा करते हुए बच्चों का रुझान पाठ की ओर दिलाएँ। अब पाठ का क्रमानुसार पठन करवाएँ।

बच्चों से पूछिए एवं उन्हें समझाएँ–

- उन्हें यह कहानी कैसी लगी?
- वे अपनी दादी की मदद कैसे करते हैं?
- उन्हें बताएँ कि अपने से बड़ों की बातें माननी चाहिए। उनकी चीज़ों का ध्यान रखना चाहिए।
- उन्हें यह भी बताइए कि परिवार में सभी के साथ मिल-जुलकर रहना चाहिए।
- बच्चों की वर्तनी संबंधी अशुद्धियों को दूर करने के लिए पाठ में आए कठिन शब्दों को श्रुतलेख के रूप में बच्चों से लिखवाएँ।

डिजिटल (Digital) के माध्यम से पाठ की ई-बुक विद्यार्थियों को दिखाकर पाठ के प्रत्येक अंग का स्पष्टीकरण कीजिए। गतिविधियों की दुनिया से परिचय भी कराइए।